Degree -2nd. Paper-IV

सामाजिक सर्वेक्षण का अध्ययन-विषय व क्षेत्र (Subject-matter and Scope of Social Survey)

सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन-विषय तथा क्षेत्र को मुख्य तौर पर दो श्रेणियों के अन्तर्गत रखा जा सकता है – प्रथम श्रेणी के अन्तर्गत वे विद्वान आते हैं जिनके अनुसार निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में एक समूह या समुदाय के जीवन से सम्बन्धित किसी भी सामाजिक घटना का अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत आता है। सर्वश्री वेल्स, बोगर्डस, सिन पाओ यंग आदि विद्वानों द्वारा व्यक्त मतों से यही बात स्पष्ट होती है। इसके विपरीत, दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत सामाजिक सर्वेक्षण का अध्ययन विषय व क्षेत्र केवल मात्र सामाजिक व्याधिकीय समस्याओं और समाज-सुधार की रचनात्मक परियोजना के प्रतिपादन तक सीमित है। सर्वश्री बर्जेस, केलॉग तथा श्रीमती यंग आदि इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। यदि इस विचार को ही आधार माना जाए तो हम कह सकते हैं कि सामाजिक सर्वेक्षण का क्षेत्र एक समय में एक निश्चित भौगोलिक प्रदेश तक ही सीमित होता है अर्थात् जिस घटना का वह अध्ययन कर रहा है उसका भौगोलिक रूप में सीमित होना आवश्यक है क्योंकि असीमित क्षेत्र में वैज्ञानिक अध्ययन यथार्थ रूप में नहीं हो सकता। इस प्रकार सीमित भौगोलिक क्षेत्र की सभी घटनाओं का अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण के क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आता है। इसके लिए

तीन आवश्यक शर्तें हैं – (अ) वह घटना सामाजिक व्याधिकीय हो, (ब) सामाजिक तौर पर वह समस्या पर्याप्त गम्भीर या महत्वपूर्ण हो और (स) उस व्याधिकीय घटना की माप व तुलना ऐसी घटनाओं से की जा सके जिन्हें हम आदर्श प्रारूप (Ideal type) मान चुके हैं।

श्री मोजर (C.A. Moser) ने सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन विषय तथा क्षेत्र को चार भागों में विभाजित किया है –

(1) जनसंख्यात्मक विशेषताएँ (Demographic Characteristics) –

सामाजिक सर्वेक्षण के क्षेत्र के अन्तर्गत किसी समूह या समुदाय विशेष की जनसंख्यात्मक विशेषताओं का अध्ययन सम्मिलित है। जनसंख्यात्मक विशेषताओं के अन्तर्गत परिवार की रचना, वैवाहिक स्थिति, जन्म व मृत्यु दर, आयु संरचना, स्त्री-पुरुष का अनुपात (Sex ratio), जन्म नियन्त्रण की घटनाएँ आदि का अध्ययन आता है।

(2) सामाजिक पर्यावरण (Social Environment) –

सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत श्री मोजर ने उन सभी सामाजिक व आर्थिक कारकों को सम्मिलित किया है जो कि लोगों के जीवन को सदैव प्रभावित करते रहते हैं। समूह या समुदाय के लोगों के विभिन्न व्यवसाय, उनकी आय, मकानों की व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य सामाजिक व भौतिक सुख-सुविधाएँ आदि विषय इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं और सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन-विषय हैं।

3

उसी प्रकार लोगों के रहन-सहन के तरीके व दशाएँ भी सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन-क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

(3) सामाजिक क्रियाएँ (Social Activities)

इसके अन्तर्गत पेशों के अतिरिक्त लोगों द्वारा की जाने वाली अन्य सामाजिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जैसे खाली समय का उपयोग, मनोरंजन सम्बन्धी क्रियाएँ, रेडियो सुनना, अखबार पढ़ना; खाने-सम्बन्धी आदतें, खर्च के सम्बन्ध में आदतें, सामुदायिक भोज, नाच-गाना, खेल-कूद, त्यौहार आदि विषय सामाजिक सर्वेक्षण की अध्ययन सामग्री बन सकते हैं। सामाजिक जीवन में पाई जाने वाली सामान्य आदतें, व्यवहार-प्रतिमान (behaviour pattern), सामाजिक प्रवृत्तियाँ, दैनिक जीवन का सामान्य प्रतिमान (general pattern of daily life) आदि विषय सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है।

(4) विचार तथा मनोवृत्तियाँ (Opinions and Attitudes)

समुदाय के लोगों का विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों व घटनाओं के प्रति विचारों तथा मनोवृत्तियों का अध्ययन भी सामाजिक सर्वेक्षण के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। उदाहरणार्थ, छुआछूत, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, राजनैतिक दल आदि के प्रति लोगों के विचारों तथा मनोवृत्तियों का अध्ययन सामाजिक सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है।

वास्तव में सामाजिक सर्वेक्षण के अध्ययन-विषय तथा क्षेत्र के सम्बन्ध में कोई निश्चित सीमा-रेखा

खींचना सम्भव नहीं है क्योंकि सामाजिक अध्ययन व अनुसन्धान का क्षेत्र समाज-विज्ञान के प्रगति के साथ-साथ स्वतः ही विस्तृत हो जाता है। अतः किसी अन्तिम क्षेत्र का निर्धारण अनुचित व अप्रकृतिक दोनों ही होगा।